

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

“भारतीय सभ्यता सबसे महान है, क्योंकि यह ज्ञान और बुद्धिमत्ता के प्रचार के लिए जानी जाती है”: जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 5वें खान अब्दुल गफ्फार खान वार्षिक स्मारक व्याख्यान में श्री आरिफ मोहम्मद खान

नई दिल्ली ,27 नवंबर2025 ,

बिहार के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान ने कल जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के डॉ. एम. ए. अंसारी ऑडिटोरियम में “रिप्लेकशन्स ऑन इंडियन कल्चर: मेकिंग सेन्स ऑफ इट्स यूनिवर्सल वॉय्स” शीर्षक पर पांचवां खान अब्दुल गफ्फार खान वार्षिक स्मारक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मजहर आसिफ़; रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी; प्रो. तनुजा, डीन, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल इन्क्लूजन (सीएसएसआई) की कार्यवाहक निदेशक तथा अकादमिक मामलों की डीन, और कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मुजीबुर रहमान, सीएसएसआई मौजूद थे।

खान अब्दुल गफ्फार खान, जो एक जाने-माने पश्तून नेता थे, भारत की आज़ादी की लड़ाई में एक अहम किरदार थे और महात्मा गांधी के करीबी साथी थे, उनकी याद में सालाना मेमोरियल लेक्चर JMI के सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल इन्क्लूजन (CSSI) ने आयोजित किया था। JMI देश की अकेली यूनिवर्सिटी है जिसने साल 2017 में खान अब्दुल गफ्फार खान की ज़िंदगी और विरासत को सेलिब्रेट करने के लिए एक मेमोरियल लेक्चर शुरू किया था। खान अब्दुल गफ्फार खान को 1987 में शांति और मानवता में उनके योगदान के लिए भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

माननीय राज्यपाल का सेंटेनरी गेट पर वाइस चांसलर, रजिस्ट्रार और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वागत किया। इसके बाद एनसीसी कैडेट्स ने शानदार गार्ड ऑफ ऑनर दिया, जिससे फंक्शन की औपचारिक शुरुआत हुई। ऑडिटोरियम पहुंचने पर, गवर्नर का वाइस चांसलर और रजिस्ट्रार ने स्वागत किया। प्रो. तनुजा ने फैकल्टी के डीन, डिपार्टमेंट के हेड, सेंटर के डायरेक्टर, JMI के ऑफिसर, फैकल्टी मेंबर और स्टूडेंट्स की शानदार सभा का स्वागत किया और लेक्चर सीरीज़ और CSSI के पीछे के विजन और मिशन के साथ-साथ मेमोरियल लेक्चर के बारे में बताया। प्रो. तनुजा ने कहा, “आज का लेक्चर खास तौर पर महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत के संविधान दिवस, 26 नवंबर के मौके पर हो रहा है, और इसलिए यह बहुत अच्छा है कि माननीय गवर्नर इस ऐतिहासिक दिन पर चीफ गेस्ट के तौर पर यूनिवर्सिटी की शोभा बढ़ा रहे हैं।”

कार्यक्रम की शुरुआत पवित्र कुरान की एक आयत के पाठ हुई, जिसके बाद जामिया तराना गाया गया। इसके तुरंत बाद, खान अब्दुल गफ्फार खान को सच्ची श्रद्धांजलि देते हुए, गवर्नर ने उनकी तस्वीर के सामने पारंपरिक दीये जलाए और शांति और अहिंसा के उन मूल्यों को श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने गफ्फार खान के जीवन और कार्य का परिचय दिया, क्योंकि गवर्नर के शब्दों में, उन्होंने “आदिवासी पश्तूनों को शांति पसंद लोगों में बदल दिया।” माननीय गवर्नर श्री आरिफ मोहम्मद खान ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत की आज़ादी की लड़ाई में खान अब्दुल गफ्फार खान के महान योगदान और बलिदान को याद करते हुए, गफ्फार खान को “हमारे आज़ादी के आंदोलन का सितारा कहा, इसीलिए उन्हें ‘फ्रंटियर गांधी’ का टाइटल दिया गया था।”

ऐतिहासिक बातों से भरे अपने वक्तव्य में, माननीय गवर्नर श्री आरिफ मोहम्मद खान ने धार्मिक किताबों के अलावा, महान भारतीय, फ़ारसी, अरबी और ग्रीक फ़िलॉसफ़रों और संतों का ज़िक्र करते हुए, भारतीय संस्कृति की खासियतों के बारे में अच्छे से बताया। उन्होंने कहा, “आदि शंकराचार्य से लेकर स्वामी विवेकानंद तक, महान संतों की शिक्षाओं की गहरी स्टडी, जिनकी जड़ें वेदांत फ़िलॉसफ़ी और उपनिषदों की शिक्षाओं में हैं, दिखाती है कि भारतीय संस्कृति एक यूनिवर्सल संस्कृति के नज़रिए पर आधारित है जो किसी इंसान को पहचान से जुड़ी खासियतों, जैसे जाति, रंग या पंथ के आधार पर नहीं देखती, बल्कि इंसान को ‘एक ऐसा प्राणी’ मानती है जिसे अलग नहीं किया जा सकता और जिसे बांटा नहीं जा सकता”, इस विश्वास पर कि आत्मा, या परमात्मा, हर किसी के अंदर रहता है, और इसलिए हर इंसान को संभावित रूप से दिव्य माना जाता है।” उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति इंसान की यह ऊंची समझ देती है और इस हद तक कि यह, “एकात्मता की भावना से बहने वाली दिव्यता को मानवीय बनाने” की अपनी क्षमता के लिए अलग है।

खान अब्दुल गफ़्फ़ार खान के जीवन के सदृश चर्चा करते हुए, माननीय गवर्नर श्री खान ने कहा कि दुनिया ने जिन पाँच महान सभ्यताओं को देखा है, उनमें “भारतीय सभ्यता सबसे महान है, क्योंकि यह ज्ञान और बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने के लिए जानी जाती है।” सबकॉन्टिनेंट के सबसे अच्छे उर्दू शायरों में से एक, अल्लामा इकबाल का ज़िक्र करते हुए, उन्होंने कहा कि ‘मीर-ए-अरब को आई,,, ठंडी हवा जहाँ से...मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है’ लाइनें भारत को उस ज़मीन के तौर पर बताती हैं जहाँ से ज्ञान और समझदारी की ठंडी हवा (cool breeze) निकली और अरब दुनिया और बाकी हर जगह फैल गई।

स्वामी विवेकानंद के दुनिया के लिए भारत के मशहूर संदेश का ज़िक्र करते हुए, जिसमें यूनिवर्सल स्पिरिचुअलिटी, लोगों के अंदर दिव्यता, प्रार्थना और पूजा का प्रैक्टिकल नेचर, अनुभव से मिलने वाला ऊंचा ज्ञान और इंसान की गरिमा पर ज़ोर दिया गया था, माननीय गवर्नर, श्री आरिफ मोहम्मद खान ने इसे भारत का एकमात्र सॉल्यूशन या अहम संदेश बताया जो दुनिया के सामने मौजूद युद्ध और दुख की समस्याओं को कम कर सकता है। श्री आरिफ मोहम्मद खान ने कहा, “जबकि बाकी दुनिया ने इंसानों की गरिमा के कॉन्सेप्ट को 1948 और उसके बाद ही पहचाना, भारत ने सदियों पहले इंसानियत की दिव्यता का संदेश दिया था।”

प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने अपने भाषण में खान अब्दुल गफ़्फ़ार खान के बताए राष्ट्रवाद के कॉन्सेप्ट पर ज़ोर दिया, जिसने उस समय के राष्ट्रवादियों को कॉलोनिअल शासन से लड़ने के लिए एक साथ आने के लिए प्रेरित किया। प्रो. रिज़वी ने कहा कि ‘फ्रंटियर गांधी’, जिन्होंने ‘खुदाई खिदमतगार’ नाम का कॉलोनिअल-विरोधी, अहिंसक आंदोलन शुरू किया था, उन्होंने अपना जीवन भारत और पश्तून लोगों की आज़ादी के लिए समर्पित कर दिया और इसके लिए उन्हें लगातार अंग्रेज़ों ने निशाना बनाया। आज़ादी जीतने के लिए एकता और अहिंसा में गफ़्फ़ार खान के विश्वास को बताते हुए, प्रो. रिज़वी ने याद किया कि भारत के प्रस्तावित बंटवारे की खबर सुनकर गफ़्फ़ार खान को कितना दुख हुआ था और वह हमेशा मानते थे कि भारत की आज़ादी पूरे दक्षिण एशिया की आज़ादी के लिए ज़रूरी है। प्रो. रिज़वी ने आगे कहा, “सबको साथ लेकर चलने वाले राष्ट्रवाद, सेक्युलरिज़्म, दया और अहिंसा का इस्तेमाल करके विरोध करने के मूल्यों ने उनके इस विश्वास को बताया कि भारत की तरक्की एक बिना बंटे, सबको साथ लेकर चलने वाले और डेमोक्रेटिक भारत में है।” उन्होंने कहा, “अब्दुल गफ़्फ़ार खान की विरासत इस बात की एक मज़बूत याद दिलाती है कि सच्चा राष्ट्रवाद सद्भाव, न्याय, इंसानी सम्मान और एक भारत की भावना में निहित है।”

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, JMI के वाइस चांसलर, प्रो. मज़हर आसिफ़ ने कहा कि JMI देश और दुनिया में सबसे अच्छी और सबसे अच्छी क्वालिटी की शिक्षा का एक शानदार उदाहरण है, क्योंकि यह सहानुभूति, साथ रहना, संस्कार, तालीम, तहज़ीब, तरबियत, स्किल और वैल्यू-बेस्ड शिक्षा, देश के प्रति समर्पण और देश सेवा के सिद्धांतों पर आधारित है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत की

सांस्कृतिक परंपराएँ सहानुभूति, साथ रहना, बातचीत और शिक्षा, सेल्फ-डिसिप्लिन और समाज के सबसे कमज़ोर तबकों के एम्पावरमेंट पर केंद्रित थीं। उन्होंने भारतीय सभ्यता की विविधता और हमेशा रहने वाले बहुलवाद पर भी ज़ोर दिया और इन आदर्शों की प्रासंगिकता पर ज़ोर दिया, जिन्हें खान अब्दुल गफ्फार खान के जीवन ने सही ढंग से दिखाया। प्रो. आसिफ़ ने कहा कि भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक और नैतिक नींव में एक यूनिवर्सल अपील है जो समाजों को शांति और आपसी सम्मान की ओर ले जाती है।

इससे पहले, खान अब्दुल गफ्फार खान के सालाना मेमोरियल लेक्चर जाने-माने विद्वानों और बुद्धिजीवियों—2017 में महात्मा गांधी के पोते श्री राजमोहन गांधी; 2018 में नीति आयोग के पूर्व CEO, श्री अमिताभ कांत; 2019 में जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर एमेरिटा, प्रो. ज़ोया हसन; और 2020 में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की प्रो. श्रुति कपिला द्वारा दिए थे।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

प्रो .साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी